

## डॉ. रॉबर्ट वानॉय: किंग्स, व्याख्यान 8

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

### द्वितीय से पहले विभाजित साम्राज्य ।

येहू से पहले विभाजित साम्राज्य हमने पिछले सप्ताह रोमन अंक "I" समाप्त किया था जो "सोलोमन के अधीन यूनाइटेड किंगडम, अध्याय 1-11" था। तो यह हमें मेरे द्वारा दी गई रूपरेखा पर रोमन अंक "II" पर लाता है, जो "येहू से पहले विभाजित साम्राज्य" है। जैसा कि आप जानते हैं, राज्य विभाजित हो गया, 931 ईसा पूर्व में येहू की क्रांति, जहां उसने अहाब के घर को नष्ट कर दिया, 841 ईसा पूर्व है इसलिए यह लगभग सौ साल की अवधि है, 931-841 ईसा पूर्व जिसे हम रोमन अंक के तहत देखेंगे। द्वितीय।"

ए. व्यवधान 1. पृष्ठभूमि पूंजी "ए" "विघटन" है और "1" "पृष्ठभूमि" है। आपने 1 किंग्स के अनुभाग के साथ-साथ एक्सपोजिटर की बाइबिल टिप्पणी में भी पढ़ा। लेकिन मैं पृष्ठभूमि के तौर पर बता दूं कि वह व्यवधान कोई ऐसी चीज नहीं है जो बिना किसी पूर्वता के घटित हुई हो। दूसरे शब्दों में, ऐसे कारक शामिल थे जिनके कारण वह व्यवधान उत्पन्न हुआ जो कुछ समय से बना हुआ था। यदि आप कनान देश में इज़राइल के प्रारंभिक इतिहास में वापस जाते हैं, तो आपको वह समझौता याद आता है जो यहोशू ने गिबोनियों के साथ किया था जो उसके पास खुद को एक विदेशी भूमि से दर्शाते हुए आए थे। यहोशू अध्याय 9 में है। यहोशू ने उनके साथ एक संधि की, जिसका अर्थ था कि इस्राएली वास्तव में इन लोगों को नष्ट करने के लिए यहोवा के आदेश को पूरा नहीं कर सकते थे क्योंकि उन्होंने यहोवा के नाम पर शपथ ली थी कि वे ऐसा नहीं करेंगे। लेकिन इसका मतलब यह था कि कनान के ठीक बीच में, आपके पास ये गिबोनवासी और अन्य लोग थे जिन्हें भूमि में एक विदेशी तत्व के रूप में रहने की अनुमति थी।

गिबोनियों, आपने यहोशू 9:14 में पढ़ा, "इस्राएल के लोगों ने अपने भोजन का नमूना तो लिया, परन्तु यहोवा से न पूछा। तब यहोशू ने उन्हें जीवित रहने देने के लिये उन से मेल की सन्धि की, और सभा के प्रधानोंने शपथ खाकर उसकी पुष्टि की। इसलिए जब उन्हें पता चलता है कि वे वास्तव में

पड़ोसी हैं, वे विदेशी नहीं थे, तो हम यहोशू 9 के पद 18 में पढ़ते हैं: "इस्राएलियों ने उन पर आक्रमण नहीं किया क्योंकि सभा के प्रधानों ने उन से परमेश्वर यहोवा की शपथ खाई थी।" इज़राइल का।" श्लोक 19 कहता है: "हमने उन्हें इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ खिलाई है। अब हम उन्हें छू नहीं सकते. हम यही करेंगे: हम उन्हें जीवित छोड़ देंगे, कि जो शपथ हम ने उन से खाई है उसे तोड़ने का क्रोध हम पर न भड़के।

अब, श्लोक 17 में जिन शहरों का उल्लेख किया गया है वे गिबोन, केफिरा, बेरोत और किर्यतयारीम हैं, जो शहरों की एक पंक्ति बनाते हैं जो आपको कनान देश के मध्य में उत्तर और दक्षिण के बीच एक विभाजन रेखा देता है। कभी-कभी इसे "गिबोनाइट वेज" कहा जाता है जो उत्तर और दक्षिण के बीच है। लेकिन वह एक विदेशी, एकजुट समूह था जो भूमि के केंद्र में रहता था जो भूमि को उत्तर और दक्षिण में विभाजित करता था। तो यह एक ऐसा कारक है जो संभवतः उत्तर और दक्षिण के बीच विभाजन की ओर ले गया होगा।

एक अन्य कारक बस यह तथ्य हो सकता है कि जहां तक क्षेत्र और आबादी का सवाल है, दो प्रमुख जनजातियाँ थीं, और वह यरूशलेम के दक्षिण में यहूदा और यरूशलेम के उत्तर में एप्रैम थी। तो फिर आपके पास एक ऐसा कारक है जो उत्तर और दक्षिण को विभाजित करने की ओर झुकेगा - उत्तर में प्रमुख जनजाति एप्रैम और दक्षिण में प्रमुख जनजाति यहूदा।

डेविड ने शुरुआत में यहूदा टी के बारे में भी पिछली प्रवृत्तियाँ थीं जो आपको इस समय से पहले की कुछ कहानियों में मिलती हैं। आपको याद होगा कि दाऊद के शासनकाल की शुरुआत में उसने शुरू में हेब्रोन में यहूदा के गोत्र पर शासन किया था। उसने वहाँ सात वर्ष तक शासन किया, परन्तु केवल यहूदा के गोत्र पर। उस समय शाऊल का पुत्र ईशबोशेत समस्त उत्तरी गोत्रों पर शासन कर रहा था। हम पाते हैं कि 2 शमूएल 2 में, पहले कुछ छंद: "समय के साथ दाऊद ने यहोवा से पूछा: क्या मैं यहूदा के नगरों में से एक में जाऊँ? [यह शाऊल की मृत्यु के ठीक बाद की बात है।] उसने पूछा, और यहोवा ने कहा, 'चढ़ जाओ।' डेविड पूछता है, 'मैं कहाँ जाऊँ?' यहोवा ने उत्तर दिया, 'हेब्रोन को।' दाऊद अपनी दोनों पत्नियों अहीनोअम और अबीगैल को संग लेकर चला गया, और हेब्रोन में बस गया। और हम पद 4 में पढ़ते हैं, "यहूदा के लोग हेब्रोन में आए, और वहाँ उन्होंने

यहूदा के घराने पर राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया।"

तुम देखो, वह केवल यहूदा पर राजा है। 2 शमूएल के अध्याय 5 में, आपने पहले कुछ छंदों में पढ़ा, ईशबोशेत की हत्या के बाद, जो इस बीच उत्तरी जनजातियों पर शासन कर रहा था, हम अध्याय 5 में पढ़ते हैं: "इस्राएल की सभी जनजातियाँ दाऊद के पास आईं हेब्रोन और कहा, 'हम आपके अपने मांस और खून हैं। अतीत में आप हमारे ऊपर थे जबकि आप ही थे जिन्होंने इज़राइल के सैन्य अभियानों में उसका नेतृत्व किया था। और यहोवा ने कहा; "तू मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा, तू उनका शासक बनेगा।" तब इस्राएल के पुरनिये हेब्रोन में दाऊद के पास आये। इससे पहले कि यहोवा इस्राएल पर दाऊद का अभिषेक करे, राजा ने हेब्रोन में उनके साथ सन्धि की। जब वह राजा बना तब उसकी उम्र 30 वर्ष थी। उसने हेब्रोन पर सात वर्ष तक राज्य किया, और समस्त इस्राएल पर तैंतीस वर्ष तक राज्य किया।" तो आप श्लोक 5 में देखते हैं कि यहूदा पर दाऊद के शासन का स्पष्ट अंतर, उत्तरी जनजातियों द्वारा राजा के रूप में मान्यता दिए जाने से पहले केवल यहूदा पर सात साल और छह महीने का था। तो, वहां भी, आप उत्तर और दक्षिण के बीच विभाजन की चिंतनशील प्रवृत्ति देखते हैं।

एक अन्य कारक, जो वास्तव में उससे पहले का है जिसे हमने अभी देखा है, जहां तक कालक्रम का संबंध है, डेविड के निर्वासन के समय, जब शाऊल उसका पीछा कर रहा था, वह अपनी जान बचाने के लिए भाग गया, और उसे शरण का स्थान मिला। पलिश्तियों। उस दौरान जब वह शाऊल के शासनकाल के दौरान फ़िलिस्तिया में निर्वासन में था, उसने यहूदा के नेतृत्व के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखा। आप इसे 1 शमूएल 30, श्लोक 26 में पाते हैं। हम पढ़ते हैं, "जब दाऊद सिकलग पहुंचा, [जो कि एक पलिश्ती नगर है।] उसने लूट का कुछ भाग यहूदा के पुरनियों के पास, जो उसके मित्र थे, यह कहकर भेजा, 'यहाँ एक है यहोवा के शत्रुओं की लूट में से तुम्हारे लिये भेंट दो।' उसने इसे यहूदा के लोगों के पास भेजा, और इसमें यहूदा के नगरों के अनेक स्थानों की सूची है। इसलिए दाऊद ने उस समय के दौरान यहूदा के नेतृत्व और यहूदा के शहरों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए, और फिर जब शाऊल मर गया, तो यह स्वाभाविक था कि यहूदा ने तुरंत उस पर राजा होने का दावा किया, लेकिन उत्तरी जनजातियों ने ऐसा नहीं किया।

सुलैमान का यहूदा के पक्ष में अब, एक और संभावित कारक जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था, सुलैमान की हमारी चर्चा के दौरान, 1 राजाओं के अध्याय 4 में, जब हमने उन जिलों को देखा जिन्हें सुलैमान के दरबार के लिए सहायता प्रदान करनी थी, याद रखें, मैंने उस समय उल्लेख किया था ऐसा नहीं लगता कि उन बारह जिलों में यहूदा के क्षेत्र का कोई संदर्भ है। तो कुछ लोगों को लगता है कि शायद सुलैमान के शासनकाल के दौरान, यहूदा के प्रति पक्षपात दिखाया गया था और यदि ऐसा है, तो यह फिर से विभाजनकारी हो सकता है। वह 1 राजा 4 में था; उन बारह जिलों में, मेरे नाम या उसके क्षेत्रों के विवरण में यहूदा का कोई उल्लेख नहीं है। ऐसा नहीं लगता कि कोई भी जिला यहूदा के क्षेत्र से मेल खाता है। तो कुछ लोगों ने जो निष्कर्ष निकाला है, और यह सिर्फ एक अनुमान है, वह यह है कि यहूदा को सुलैमान के लिए यह मासिक सहायता प्रदान करने की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें छूट दी गई, जो यहूदा के प्रति पक्षपात होगा, जो दाऊद और सुलैमान का गोत्र था। शायद यही कारण रहा होगा कि वे अपने ही गोत्र का पक्ष ले रहे थे, यदि ऐसा है। तो आप देख सकते हैं कि यह किस प्रकार विभाजनकारी होगा। लेकिन वे केवल कुछ कारक हैं जो शायद इज़राइल के इतिहास में इस बिंदु पर हम जो पाते हैं उसकी पृष्ठभूमि में शामिल हैं जहां आप स्वयं विघटन और राज्य के दो हिस्सों में टूटने पर आते हैं।

2. यारोबाम ने सुलैमान और सुलैमान की मृत्यु के विरुद्ध विद्रोह किया - 1 राजा 11:26-41 ठीक है, आपकी शीट पर संख्या "2" है: "यारोबाम ने सुलैमान और सुलैमान की मृत्यु के विरुद्ध विद्रोह किया।" 1 राजा 11:26-41 में, जैसा कि आपको याद है, यारोबाम, जिसे अक्सर नबात का पुत्र यारोबाम कहा जाता है, वह सुलैमान के दरबार का एक अधिकारी था जिसे एप्रैम और मनश्शे की श्रम शक्ति का प्रभारी बनाया गया था। यदि आप आयत 28 को देखें तो आप पढ़ते हैं, "यारोबाम एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था, और जब सुलैमान ने देखा कि वह युवक अपना काम कितना अच्छा करता है, तो उसने उसे यूसुफ के घराने की पूरी श्रम शक्ति का प्रभारी बना दिया। यूसुफ का घराना एप्रैम और मनश्शे होगा। एप्रैम और मनश्शे यूसुफ के दो पुत्र थे जो दो जनजातियों और एप्रैम और मनश्शे के जनजातीय क्षेत्रों के मुखिया बने। इसलिए नबात का पुत्र यारोबाम उन दोनों गोत्रों की श्रम शक्ति का अधिकारी था। वह स्वयं एप्रैम के गोत्र से था।

पद 26 में आप देखते हैं कि वह सुलैमान के अधिकारियों में से एक और एप्रैमी था। उसकी माँ ज़ेरूआ नाम की एक विधवा थी। निस्संदेह, एप्रैम उत्तरी जनजाति थी, जो दक्षिण की प्रमुख जनजाति का प्रतिरूप थी। वह वही है जिसके पास अहिय्याह आया था और उसने उससे कहा था कि प्रभु दाऊद से राज्य छीन लेगा और उसे उसका एक अच्छा हिस्सा देगा।

इससे पहले भी ऐसा लगता है कि उसने सुलैमान के खिलाफ विद्रोह भड़काने की ठान ली थी। मैं कहता हूँ कि पद 37 में एक वाक्यांश के आधार पर, जहां आप पढ़ते हैं (यह अहिजा के शब्द में है; वह कहता है), "जहां तक तेरी बात है, मैं तुझे ले लूंगा और तू उस सब पर राज्य करेगा जो तेरा मन चाहता है।" ऐसा लगता है जैसे यारोबाम ने पहले ही इस पर विचार कर लिया था और वह राज्य चाहता था। "तू जो कुछ तेरा मन चाहे उस पर प्रभुता करेगा, तू इस्राएल का राजा होगा।" अब, जैसा कि आप याद करते हैं, यह आदमी, एक एप्रैमी, इस श्रम बल का प्रभारी, जाहिरा तौर पर पहले से ही शासन करने की इच्छा के साथ, अहिजा, भविष्यवक्ता द्वारा सामना किया जाता है और शब्द और प्रतीक दोनों में कहा जाता है कि वह राजा होगा।

मेरे कहने का मतलब यह है: अहिय्याह के पास यह कोट था जिसे उसने बारह टुकड़ों में फाड़ दिया, और उसने यारोबाम से कहा कि वह अपने लिए दस टुकड़े ले ले। और फिर वह कहता है कि उस प्रतीकवाद का अर्थ है कि प्रभु सुलैमान के हाथ से राज्य छीन लेगा और उसे दस गोत्र देगा। वह पद 31 है। "परन्तु अपने दास दाऊद और यरूशलेम नगर के कारण, जिसे मैं ने सब गोत्रों में से चुन लिया है, उसका एक ही गोत्र होगा।" अतः यारोबाम का सामना अहिय्याह से हुआ, जिसने उसे शब्दों और प्रतीकों दोनों में बताया कि यहोवा सुलैमान से दस गोत्र लेने और उन्हें उसे देने जा रहा है।

परन्तु जैसे-जैसे अहिय्याह आगे बढ़ता है, वह स्पष्ट करता है कि सुलैमान के दिनों में ऐसा नहीं होना था। पद 34-35 में वह कहता है, "मैं सुलैमान के हाथ से सारा राज्य न छीनूंगा, और वह जीवन भर राज्य करेगा। अपने सेवक दाऊद के कारण, जिसे मैं ने अपनी आज्ञाओं और प्रतिमाओं का पालन करने के लिये चुन लिया है, मैं उसके पुत्र के हाथ से राज्य छीन लूंगा, और तुम्हें दस गोत्र दे दूंगा। मैं उसके पुत्र को एक गोत्र दूंगा, कि मेरा सेवक दाऊद यरूशलेम में सदैव मेरे साम्हने दीपक जलाता रहे।" इसलिए अहिय्याह ने यारोबाम से कहा कि वह इन दस गोत्रों को प्राप्त करने

जा रहा है, परन्तु सुलैमान के दिनों में ऐसा नहीं होगा; यह उसके बेटे के दिनों में होने वाला है।

लेकिन जाहिर तौर पर यारोबाम यहोवा के समय की प्रतीक्षा नहीं करना चाहता था और सुलैमान की मृत्यु की प्रतीक्षा नहीं करना चाहता था। और जाहिर तौर पर उसने सुलैमान की मृत्यु से पहले भी विद्रोह करने का प्रयास किया था। आपने श्लोक 26 में पढ़ा, "नबात के पुत्र यारोबाम ने राजा के विरुद्ध विद्रोह किया।" फिर आपने श्लोक 40 में पढ़ा कि सुलैमान ने यारोबाम को मारने की कोशिश की, लेकिन यारोबाम राजा शीशक के पास मिस्र भाग गया और सुलैमान की मृत्यु तक वहीं रहा। इसलिए, यदि आप श्लोक 26 डालते हैं, जहां यह कहता है कि यारोबाम ने विद्रोह किया, साथ ही श्लोक 40, जहां यह कहता है कि सुलैमान ने यारोबाम को मारने की कोशिश की, तो ऐसा लगता है जैसे यारोबाम ने सुलैमान की मृत्यु से पहले ही उत्तरी जनजातियों को अपने लिए हथियाने की कोशिश की थी।

यह आपको एक अशुभ संकेत देता है, आप शायद कह सकते हैं कि जब यारोबाम उत्तर में सिंहासन पर आएगा तो आप उससे किस प्रकार के शासन की उम्मीद कर सकते हैं। ऐसा लगता है कि वह यहाँ भी, शुरू में, भविष्यवक्ता के शब्द को सुनने के लिए तैयार नहीं था जिसने कहा था, "सुलैमान के दिनों में ऐसा नहीं होगा।" उन्होंने चीजों को अपने हाथ में लेने की कोशिश की। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि सुलैमान की मृत्यु से पहले राज्य को सफलतापूर्वक लेने में उसकी विफलता के परिणामस्वरूप मिस्र भागना पड़ा जहां वह सुलैमान की मृत्यु तक रहा।

अब, भगवान ने इस तरह से सुलैमान का न्याय क्यों किया, उसके वंश से दस जनजातियों को लेकर - उसके वंशजों से - इसका कारण उस अध्याय में पहले दिया गया है जिसे हमने पहले सप्ताह में देखा था। श्लोक 9-13: "इसलिये यहोवा सुलैमान पर क्रोधित हुआ, क्योंकि उसका मन यहोवा से फिर गया।" और पद 11 कहता है, "यहोवा ने सुलैमान से कहा, "तेरी चाल ऐसी है, और तू ने जो वाचा और विधियां मैं ने तुझे दी हैं उनका पालन नहीं किया है, इस कारण मैं राज्य को निश्चय तुझ से छीनकर किसी एक को दे दूंगा।" आप अधीनस्थ तौभी मैं तेरे पिता दाऊद के कारण तेरे जीते जी ऐसा न करूंगा। तो आपको इसका कारण वहां और श्लोक 33 में भी मिलेगा, जिस अध्याय में हम आज रात देख रहे हैं। तुम पढ़ते हो, "मैं ऐसा करूंगा, क्योंकि उन्होंने मुझे त्यागकर सीदोनियों की देवी अशतोरत, मोआबियों के देवता कमोश, और अम्मोनियों के देवता मोलेक की

पूजा की है, और मेरे मार्गों पर नहीं चले, वा धर्म का काम नहीं किया है। मैं अपनी दृष्टि में हूँ, वा सुलैमान के पिता दाऊद की नाई मेरी विधियां और व्यवस्थाएं रखता हूँ। अतः यही कारण हैं कि वह वाचा से विमुख हो गया और झूठे देवताओं के पीछे चला गया।

ठीक है, यह संख्या "2" है, "यारोबाम ने सुलैमान के विरुद्ध विद्रोह किया।" और फिर 1 राजा 11, श्लोक 41 के अंत में, आपने सुलैमान की मृत्यु के बारे में पढ़ा। "सुलैमान के शासनकाल की अन्य सभी घटनाओं के बारे में, उसने जो कुछ किया, जो बुद्धि उसने प्रदर्शित की, वह सुलैमान के इतिहास की पुस्तक में लिखी गई है। सुलैमान ने यरूशलेम में सारे इस्राएल पर चालीस वर्ष तक राज्य किया, फिर अपने पिता के पास सो गया। और उसे उसके पिता दाऊद के नगर में मिट्टी दी गई, और उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्थान पर राजा हुआ।"

3. रहूबियाम का मूर्खतापूर्ण रवैया - 1 राजा 12 तो यह हमें "3" नंबर पर लाता है "रहोबाम का मूर्खतापूर्ण रवैया।" वह 1 राजा 12--अगला अध्याय है। हमने अध्याय 11 के अंत में पढ़ा कि रहूबियाम सुलैमान के बाद राजा बना। ऐसा लगता है कि यह एक सामान्य क्रम है। हालाँकि, अध्याय 12 के श्लोक 1 में एक दिलचस्प कथन है जहाँ यह कहा गया है, "रहोबाम शकेम गया जहाँ सभी इस्राएली उसे राजा बनाने के लिए गए थे।" ऐसा लगता है जैसे यह उत्तरी जनजातियों का संदर्भ है। याद रखें, जब दाऊद राजा बना, तो शुरू में वह यहूदा पर राजा था, केवल बाद में उसे उत्तरी जनजातियों पर राजा के रूप में स्वीकार किया गया और प्रशंसित किया गया। ऐसा लगता है कि जब यह उत्तराधिकार यहां होता है तो रहूबियाम को लगता है कि शेकेम जाना और उत्तरी जनजातियों द्वारा राजा के रूप में अनुमोदित होना आवश्यक है।

तुम दूसरी आयत में पढ़ते हो कि जब यारोबाम ने, जो मिस्र भाग गया था, यह सुना, तो वह तुरन्त मिस्र में उपस्थित होने के लिये लौट आया। उस बैठक में आप पाते हैं कि सुलैमान ने इस्राएल के लोगों पर जो जुआ डाला था उसे हल्का करने के लिए रहूबियाम से मांग रखी गई है। पद 4 में आपने पढ़ा कि सभा ने कहा, "तुम्हारे पिता ने हम पर भारी जूआ डाल दिया। परन्तु अब उस कठोर परिश्रम और उस भारी जूए को हल्का करो जो उसने हम पर डाला है और हम तुम्हारी सेवा करेंगे।"

और रहूबियाम ने उस पर विचार करने के लिये कुछ समय मांगा। वह कुछ सलाहकारों से

परामर्श करता है जिन्होंने उसके पिता सोलोमन को सलाह दी थी, और उन्होंने उसे उस पर सहमति देने की सलाह दी, लेकिन फिर उन्होंने उसे कुछ युवा सलाहकारों से परामर्श करने की सलाह दी। आप कविता 10 में पढ़ते हैं, "जो जवान उसके साथ बड़े हुए थे, उन्होंने उत्तर दिया, 'इन लोगों से कहो जिन्होंने तुमसे कहा था, "तुम्हारे पिता, हम पर भारी जूआ डालो, लेकिन इसे हल्का करो," उनसे कहो, "मेरी छोटी उंगली मेरे पिता की कमर से भी मोटी है. मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ रखा था, मैं उसे और भी भारी बनाऊंगा। मेरे पिता ने तुम्हें कोड़ों से मारा, मैं तुम्हें बिच्छुओं से मारूंगा।" दूसरे शब्दों में, न केवल कार्यों को तेज किया जाना था, बल्कि दंड भी देना था। "मेरे पिता ने तुम्हें कोड़ों से पीटा, मैं तुम्हें बिच्छुओं से मारूंगा।" बिच्छू एक चमड़े का पट्टा होता है जो धातु या पत्थर या ऐसी किसी चीज़ के नुकीले उभारों से भरा होता है जो काट देता है। कार्य तेज़ हो गए हैं, सज़ाएँ तेज़ हो गई हैं, और निश्चित रूप से ये शब्द एक मूर्खतापूर्ण रवैया ही नहीं बल्कि एक मूर्खतापूर्ण रवैया भी दर्शाते हैं - ये शायद ही सच्चे सह-विरोधी राजा के शब्द हैं - कोई ऐसा व्यक्ति जो उन लोगों के लिए चिंता और करुणा रखता है जिनके प्रति वह है और शासक के रूप में रखा गया है।

तो इस्राएल की प्रतिक्रिया श्लोक 16 में है, "जब सारे इस्राएल ने देखा कि राजा ने उनकी बात सुनने से इन्कार किया है, तो उन्होंने राजा से कहा, 'दाऊद में हमारा क्या भाग, यिशै के पुत्र में हमारा क्या भाग? हे इस्राएल, अपने तम्बुओं की ओर! हे दाऊद, अपने घर की सुधि ले।" इसलिए इस्राएलियों ने कहा कि हम तुम्हें राजा के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे, परन्तु रहूबियाम उस प्रतिक्रिया को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।

इसलिए वह श्लोक 18 में एडोनीराम नाम के एक व्यक्ति को भेजता है। आपने पढ़ा कि राजा रहूबियाम ने अदोनीराम को भेजा जो बल-श्रम का प्रभारी था। वह रहूबियाम के पिता सुलैमान के अधीन उसका अधिकारी था। "परन्तु सारे इस्राएल ने उसे पत्थरों से मार डाला। राजा रहूबियाम अपने रथ पर चढ़ गया और यरूशलेम को भाग गया। इस प्रकार इस्राएल आज तक दाऊद के घराने के विरुद्ध विद्रोह करता रहा है," - संभवतः वह दिन है जब 2 राजाओं की पुस्तक लिखी गई है। दूसरे शब्दों में, इस बिंदु पर राज्य विभाजित था और यह अपने शेष इतिहास के लिए विभाजित रहा। इस प्रकार 1 राजा 11:39 की भविष्यवाणी पूरी हुई। अहिय्याह ने यहोवा की ओर से बोलते हुए

कहा, इस कारण मैं दाऊद के वंश को नम्र करूंगा, परन्तु सदैव के लिये नहीं। इसलिए भविष्यवाणी पूरी हुई, और निर्वासन के समय तक यहूदा इज़राइल के शेष इतिहास के लिए इज़राइल से अलग रहा जब उत्तरी साम्राज्य को 722 ईसा पूर्व में अशशूर में ले जाया गया।

एक और चीज़ है जो 1 राजा 12:16 में एक कारक हो सकती है। हिब्रू कविता और हिब्रू गद्य के बीच विभाजन रेखा बहुत तरल है। प्राथमिक चीज़ जिसे आमतौर पर हिब्रू कविता की विशेषता के रूप में इंगित किया जाता है जो कविता को गद्य से अलग करती है, वह है समानता। और आप देख रहे हैं कि आपके पास यहां है, "डेविड में हमारा क्या हिस्सा है?" फिर, "यिशै के बेटे में हमारा क्या हिस्सा है?" तो हमें दो समानांतर रेखाएँ मिलती हैं। "हे इस्राएल, अपने डेरे की ओर" और फिर, "हे दाऊद, अपने घर की सुधि ले!" आप देखते हैं कि वहां दोहरी समानताएं हैं। आप गद्य में भी ऐसी समानता पाते हैं, और यह एक उदाहरण है। यह चीजों को रखने का एक सशक्त तरीका है। इस प्रकार की दोहरावदार बयानबाजी आम तौर पर सेमेटिक लेखन की विशेषता है।

एक। रहूबियाम का इस्राएल को फिर से जीतने का प्रयास - 1 राजा 12:21-24

ठीक है, वह "3" "रहोबाम का मूर्खतापूर्ण रवैया" था। "ए" है: "व्यवधान।" "बी" है: "यहूदा के पहले तीन राजा," जो रहूबियाम, अबिय्याह और आसा हैं। तो "1" रहूबियाम है, 1 राजा 11:42-14:31 जो 2 इतिहास 9:31-12:16 में समान है। अब, मेरे पास दो उप-बिंदु हैं, आपकी रूपरेखा में भी: "ए" "रहोबाम का इज़राइल को फिर से जीतने का प्रयास, 1 राजा 12:21-24" है। और "बी" है: "मिस्र के साथ संबंध।"

आइए सबसे पहले इसराइल को फिर से जीतने के रहूबियाम के प्रयास को देखें, 1 राजा 12:21-24। उस अध्याय के अंत में, अंत में बिल्कुल नहीं, लेकिन पद 21 में शुरुआत में, आपने पढ़ा कि रहूबियाम ने उत्तरी जनजातियों को जबरन अपने अधीन करने के प्रयास के लिए एक सेना जुटाने का फैसला किया; राज्य में एकता बहाल करने के लिए। हालाँकि, उसका सामना एक भविष्यवक्ता से होता है। परमेश्वर का वचन शमियाह के पास आता है, और वह रहूबियाम के पास आता है और उससे कहता है, ऐसा मत करो। आपने पद 24 में पढ़ा, "यहोवा यों कहता है, 'अपने भाइयों इस्राएलियों पर चढ़ाई मत करो। तुम में से हर एक अपने घर चले जाओ, क्योंकि यह मेरा

काम है।' इसलिये उन्होंने यहोवा की बात मानी, और यहोवा की आज्ञा के अनुसार अपने घर लौट गए। अतः उस विषय में रहूबियाम यहोवा के वचन अर्थात् भविष्यद्वक्ता के वचन के अधीन रहता है। वह अपनी योजनाएँ छोड़ देता है और विभाजन बना रहता है।

बी। मिस्र के साथ रहूबियाम के संबंध - 1 राजा 14 "बी" है: "मिस्र के साथ उसके संबंध।" यह अध्याय 14 की ओर बढ़ता है। 1 राजा 14:25-28। यहाँ क्या होता है कि किंग्स का लेखक अध्याय 12 में उस बिंदु पर स्थानांतरित हो जाता है कि उत्तर में यारोबाम के साथ क्या हो रहा है और सुनहरे बछड़ों के साथ उसकी सेटिंग इत्यादि, और वह अध्याय 14 तक रहूबियाम में वापस नहीं आता है। :21 और निम्नलिखित। लेकिन आपने वहाँ 1 राजा 14:25 पढ़ा, "राजा रहूबियाम के पांचवें वर्ष में, मिस्र के राजा शीशक ने यरूशलेम पर आक्रमण किया। उसने मन्दिर और राजमहल को लूट लिया।" आपने पढ़ा, "उसने सुलैमान द्वारा बनाई गई सभी सोने की ढालों सहित सब कुछ ले लिया, इसलिए रहूबियाम ने उनके स्थान पर पीतल की ढालें बना दीं।"

अब यह संदर्भ दिलचस्प है क्योंकि यह साम्राज्य काल की उन घटनाओं में से एक है जो बाइबिल के अतिरिक्त साक्ष्यों से पुष्ट होती है। और, वास्तव में, हम मिस्र के अभिलेखों से सीखते हैं कि जब शीशक ने यरूशलेम पर हमला किया, तो वह वास्तव में एक बड़े अभियान का हिस्सा था। ऐसा नहीं था कि वह सिर्फ यरूशलेम पर हमला करने के लिए मिस्र से बाहर आया था। यही एकमात्र चीज़ है जिसके बारे में बाइबिल का संदर्भ हमें बताता है। लेकिन उस अभियान का एक विजय शिलालेख थेब्स के एक मंदिर की दीवारों पर पाया गया था। उस शिलालेख में, शीशक ने कई शहरों की सूची दी है जिन्हें उसने लूटा। यह दिलचस्प है; वे न केवल यहूदा में, बल्कि उत्तरी साम्राज्य में भी शहर थे। और यह आश्चर्यजनक है क्योंकि आपको याद है कि यारोबाम, जो अब उत्तरी साम्राज्य में राजा था, जब उसने समय से पहले सुलैमान के खिलाफ विद्रोह करने की कोशिश की थी और असफल रहा था, तो वह मिस्र भाग गया और शीशक के साथ शरण ली। इससे तुम यह सोचोगे कि यारोबाम और शीशक के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध होंगे। लेकिन इस बिंदु पर इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता क्योंकि शीशक ने कनान देश में यह अभियान चलाया है। वास्तव में, केवल यरूशलेम पर ही नहीं, बल्कि उत्तरी साम्राज्य के शहरों पर भी हमला होता है।

शीशक और इज़राइल अब, मुझे नहीं पता कि आप इन दो खंडों से परिचित हैं या नहीं। ये प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों के दो मानक खंड हैं। यह मिस्र, मेसोपोटामिया और हित्तियों, आम तौर पर प्राचीन निकट पूर्व के ग्रंथों का अंग्रेजी अनुवाद है। इन ग्रंथों का अनुवाद और प्रकाशन किया गया है। ग्रंथों को जेम्स प्रिचर्ड द्वारा संपादित किया गया था और खंडों को *प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथ* और संक्षिप्त रूप में एनईटी कहा जाता है। ओल्ड टेस्टामेंट से संबंधित *एंशिंट नियर ईस्टर्न पिक्चर्स* नामक एक सहयोगी खंड है। कई मामलों में पहले खंड में जिन पाठों का अनुवाद किया गया है, उनकी तस्वीर दूसरे खंड में मौजूद है।

अब, शीशक के उस विजय शिलालेख का पाठ इस *प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों में पृष्ठ 263 पर* है। और *एंशिंट नियर ईस्टर्न पिक्चर्स में* चित्र 349 है। मैं आपको यह दिखाऊंगा और आपको बताऊंगा। मुझे लगता है ये देखना दिलचस्प है। पृष्ठ 128 पर चित्र 349, वह यहां नीचे है, आप वहां शीशक का चित्र और उसके चारों ओर शिलालेख देख सकते हैं। यहाँ लिखा है "शेशोक द्वारा कब्ज़ा किए गए फ़िलिस्तीनी और सीरियाई शहरों की सूची", जो शीशक के समान है। शेशोक और शीशक एक ही हैं। अलग-अलग वर्तनी का कारण यह है कि मिस्र के चित्रलिपि का उच्चारण कैसे किया जाए, इसके बारे में अलग-अलग विचार हैं। मुझे बस इसे इधर-उधर करने दो...

फिर साक्ष्य का एक और टुकड़ा मिला है, और वह एक स्मारक का टुकड़ा है जो मेगिदो में पाया गया था जिस पर शीशक का नाम है। अधिकांश लोगों का मानना है कि शायद इसका मतलब यह है कि उन्होंने इस अभियान के समय एक विजय स्मारक के रूप में मेगिदो में किसी प्रकार का स्मारक स्थापित किया था और उस पर अपना नाम रखा था। उसके नाम का एक टुकड़ा मिला है। *प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों की जाँच करें*, पृष्ठ 264। हालाँकि हमारे पास इसकी कोई तस्वीर नहीं है। तो वह है राजाओं में वर्णित शीशक का आक्रमण।

यहां 2 इतिहास 12 में हमले और उसके कारणों का पूर्ण विवरण दिया गया है, जो एक समानांतर मार्ग है। यदि आप 2 इतिहास 12:5 को देखते हैं, तो आप वहां पढ़ते हैं कि शमियाह - वही भविष्यवक्ता जिसने रहूबियाम से कहा था कि वह वापस न जाए और उत्तर पर आक्रमण न करे - 2 इतिहास 12:5 में यह कहा गया है, "भविष्यवक्ता शमियाह रहूबियाम के पास आया और यहूदा

के अगुवे शीशक के डर के मारे यरूशलेम में इकट्ठे हुए थे। उस ने उन से कहा, यहोवा यों कहता है, तुम ने मुझे त्याग दिया है; इसलिए, अब मैं तुम्हें शीशक के पास छोड़ देता हूँ।' इस्राएल के प्रधानों और राजा ने दीन होकर कहा, यहोवा न्यायी है। जब यहोवा ने देखा कि वे दीन हो गए हैं, तब यहोवा का यह वचन शमियाह के पास पहुंचा, 'क्योंकि वे दीन हो गए हैं, इस कारण मैं उन्हें नष्ट न करूंगा, परन्तु शीघ्र ही उन से छुटकारा पाऊंगा। मेरा क्रोध शीशक के द्वारा यरूशलेम पर न भड़केगा। हालाँकि, वे उसके अधीन हो जायेंगे, ताकि वे मेरी सेवा करने और अन्य देशों के राजाओं की सेवा करने के बीच का अंतर सीख सकें।' जब मिस्र के राजा शीशक ने यरूशलेम पर आक्रमण किया, तो वह मन्दिर का खजाना लूट ले गया।”

मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि हमला इसलिए हुआ क्योंकि रीबोम और यहूदा यहोवा से दूर हो गए थे। परन्तु जब उन्होंने पश्चात्ताप किया और मान लिया कि यहोवा न्यायी है, तब यहोवा ने स्थिति सुधार दी, कि यद्यपि वे लूटे गए, तौभी वे पूरी तरह नष्ट न हुए।

यहूदा का दूसरा राजा - अबिजा ठीक है, यह "रहोबाम और इसराइल को फिर से जीतने का उसका प्रयास" और मिस्र के साथ उसके संबंध हैं। दूसरा, अबिजा, या अबिजाम, उसका नाम दोनों रूपों में आता है। 1 राजा 14:31-15:8 और 2 इतिहास 13:1-22 में समानान्तर। अबिय्याह का शासनकाल छोटा था, केवल तीन वर्ष। आप 14:31 में पढ़ते हैं कि, "रहोबाम ने अपने पुरखाओं के साथ विश्राम किया।" यह कहने का एक विशिष्ट तरीका है कि उनकी मृत्यु हो गई। "उसे दाऊद के नगर में उनके साथ दफनाया गया। उनकी माता का नाम नामा: था। वह अम्मोनी थी, और उसका पुत्र अबिय्याह उसके बाद राजा हुआ।" फिर आप 15:1 में पढ़ते हैं, "नबात के पुत्र यारोबाम के राज्य के अठारहवें वर्ष में अबिय्याह यहूदा पर राजा हुआ, और यरूशलेम में तीन वर्ष तक राज्य करता रहा। उसकी माता का नाम माका था जो अबीशालोम की बेटी थी। उसने वे सभी पाप किये जो उसके पिता ने उससे पहले किये थे; उसका हृदय अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति पूरी तरह समर्पित नहीं था जैसा कि उसके पूर्वज दाऊद का था।”

अब, ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु के प्रति निष्ठा के प्रश्न के संबंध में वह एक जटिल व्यक्तित्व थे। 1 राजा 15:3 कहता है कि "उसका हृदय पूरी तरह से प्रभु के प्रति समर्पित नहीं था, फिर भी

दाऊद के कारण प्रभु ने उसे बचा लिया।" लेकिन 2 इतिहास 13:15-18 में, हमें तस्वीर का दूसरा पक्ष मिलता है। 2 इतिहास 13:15: "और यहूदा के लोगों ने युद्ध का नारा बुलंद किया। युद्ध की ध्वनि सुनकर परमेश्वर ने यारोबाम और सारे इस्राएल को अबिय्याह और यहूदा के साम्हने से मार डाला। इस्राएली यहूदा के सामने से भाग गए और परमेश्वर ने उन्हें उनके हाथ में कर दिया। अबिय्याह और उसके लोगों ने उन्हें भारी नुकसान पहुँचाया जिससे इस्राएल के सक्षम लोगों में से 500,000 लोग हताहत हो गए। उस अवसर पर इस्राएल के लोग वश में कर लिये गये। यहूदा के लोग विजयी हुए क्योंकि उन्होंने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखा। अबिय्याह ने यारोबाम का पीछा किया और बेतेल, यशाना, और एप्रोन के नगरों और उनके आसपास के गांवों को उस से ले लिया। अबिय्याह के समय में यारोबाम फिर से सत्ता में नहीं आया।"

इसलिए, 2 इतिहास में हमने पढ़ा कि क्योंकि यहूदा ने यहोवा पर भरोसा किया था इसलिए वे उत्तर से यारोबाम के हमले पर विजयी हुए। तो हम देखते हैं कि उनके जीवन में विश्वास और अविश्वास का मिश्रण प्रदर्शित हुआ होगा। लेकिन यह निश्चित रूप से भगवान की दया थी कि यरूशलेम को नष्ट नहीं किया गया था, न तो शीशक द्वारा या उत्तर से इस हमले से, लेकिन संकेत यह है कि अबिय्याह का दिल भगवान के प्रति परिपूर्ण नहीं था जैसा कि उसे होना चाहिए था। जैसा कि किंग्स श्लोक 3 में कहते हैं, "उसका हृदय पूरी तरह से अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति समर्पित नहीं था।" राजाओं ने अबिय्याह के साथ बहुत अधिक व्यवहार नहीं किया और उसका शासनकाल संक्षिप्त था।

यहूदा का तीसरा राजा--आसा आइए आसा की ओर चलें जो यहूदा का तीसरा शासक है, 1 राजा 15:8-24 और 2 इतिहास 14-16। अब आसा एक प्रमुख राजा था। उसने इकतालीस वर्ष तक शासन किया। उनका बहुत लम्बा शासनकाल था। हम 1 राजा 15:9 में देखते हैं, "यारोबाम के बीसवें वर्ष में आसा यहूदा का राजा हुआ, और यरूशलेम में इकतालीस वर्ष तक राज्य करता रहा।" यह शाऊल, दाऊद या सुलैमान से भी अधिक लंबा है। शाऊल के शासनकाल की अवधि कुछ अस्पष्ट है। श्लोक में एक शाब्दिक भ्रष्टाचार है जो उसके शासनकाल की अवधि का वर्णन करता है। 1 सैम 13:1 मुझे विश्वास है। "शाऊल तीस वर्ष का था जब वह राजा बना और उसने इस्राएल पर शासन किया,"

एनआईवी कहता है, "बयालीस वर्ष" लेकिन वह "चालीस" एक प्रविष्टि थी, जैसा कि "तीस" था। पाठ में वहाँ एक प्रविष्टि है। देखें कि एनआईवी टेक्स्ट नोट्स कहते हैं कि हिब्रू में "चालीस" नहीं है। इसलिए यह कुछ हद तक अस्पष्ट है कि शाऊल ने कितने समय तक शासन किया। मुझे ऐसा लगता है कि अधिनियमों की पुस्तक में शाऊल के शासनकाल की अवधि का एक संदर्भ है। मुझे यकीन नहीं है कि मैं इसे पा सकूंगा। यह अधिनियम 13:21 में हो सकता है? हाँ, "तब लोगों ने एक राजा की माँग की, और उसने उन्हें बिन्यामीन के गोत्र में से कीश के पुत्र शाऊल को दे दिया, जिसने चालीस वर्ष तक शासन किया।" लेकिन आप देखते हैं कि यह 1 सैम में कहता है। 13:1 इब्रानी पाठ में, "जब शाऊल राजा बना तब वह एक वर्ष का था, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा।" अधिनियम 13 कहता है, "उसने चालीस वर्ष तक राज्य किया।" यदि आप इसे एनआईवी के अनुसार पढ़ते हैं, तो उन्होंने "चालीस वर्ष" तक शासन नहीं किया; उसने "बयालीस वर्ष" तक राज्य किया। वह चालीस अधिक सटीक बयालीस की तुलना में एक गोल संख्या हो सकती है। लेकिन बात यह है कि 1 शमूएल 13:1 के पाठ में कुछ घटित हुआ है। वहाँ स्पष्ट रूप से एक पाठ्य समस्या है।

किसी भी स्थिति में, यदि उसने बयालीस वर्ष तक शासन किया, तो मैंने आसा के बारे में जो कहा वह सत्य नहीं है—मैंने कहा कि आसा ने शाऊल, दाऊद या सुलैमान से भी अधिक समय तक शासन किया। उसने इकतालीस वर्ष तक राज्य किया। दाऊद ने चालीस वर्ष तक राज्य किया, और सुलैमान ने भी चालीस वर्ष तक राज्य किया। हम दाऊद के बारे में 1 राजा 2:10 में पढ़ते हैं: दाऊद अपने पुरखाओं के पास सो गया, उसे दाऊद के नगर में दफनाया गया, उसने चालीस वर्ष तक इस्राएल पर, सात वर्ष तक हेब्रोन में, 33 वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया। और सुलैमान 1 राजा 11:42 में कहता है, "सुलैमान ने यरूशलेम में समस्त इस्राएल पर चालीस वर्ष तक राज्य किया।" इस प्रकार आसा ने इकतालीस वर्ष तक राज्य किया।

उन्हें एक अच्छे राजा के रूप में वर्णित किया गया है जिसका दिल सही था। 1 राजा 15:1, हालाँकि, एक योग्यता है: "आसा ने वही किया जो प्रभु की दृष्टि में सही था [15:11] जैसा उसके पिता दाऊद ने किया था। उसने देश से पुरुष तीर्थ वेश्याओं को निष्कासित कर दिया, अपने पिता द्वारा बनाई गई मूर्तियों से छुटकारा पा लिया, यहां तक कि अपनी दादी माका को रानी मां के पद से हटा दिया क्योंकि उसने एक घृणित अशेरा पोल बनाया था। आसा ने उस खम्भे को काट डाला और

किद्रोन घाटी में जला दिया ।” लेकिन उसकी योग्यता श्लोक 14 में है: “हालाँकि उसने ऊँचे स्थानों को नहीं हटाया, फिर भी आसा का हृदय जीवन भर यहोवा के प्रति समर्पित रहा। वह चाँदी और सोना, और वे वस्तुएँ जो उसने और उसके पिता ने समर्पित की थीं, यहोवा के मन्दिर में ले आया।” यह अभिव्यक्ति कि “जिसका हृदय प्रभु की ओर परिपूर्ण था, तथापि उसने ऊँचे स्थानों को नहीं हटाया” या उसके समान कुछ, कुछ ऐसा है जो आपको राजाओं में कई स्थानों पर मिलता है। इसलिए मुझे लगता है कि हमें यह देखना चाहिए कि ये ऊँचे स्थान क्या थे और इनके निहितार्थ क्या हैं, जो एक जटिल प्रश्न है। यह जानना कठिन है कि इसे कैसे समझाया जाए।

ऐसा करने से पहले आइए पांच मिनट का ब्रेक लें।

क्रिस्टन रमी द्वारा प्रतिलेखित  
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन  
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया